ॐ

नमः सिद्धेभ्यः

पाठशाला संचालन हेतु शोध पत्र

जिनस्वर टीम और स्वरूप स्थिरता फाउंडेशन[1]

तीन भुवन में सार, वीतराग विज्ञानता।

शिव स्वरूपस्वरुप शिवकार, नमहुँ त्रियोग संभार कैं।।

पाठशाला के संदर्भ में ध्यान देने योग्य मुख्यतः तीन स्तंभ हैं :

१. पाठशाला का उद्देश्य

२. पाठशाला शिक्षकों के आवश्यक गुण

३. पाठशाला के संचालन के तरीके

पाठशाला का उद्देश्य :

1. छात्रों में धर्म के प्रति रुचि जागृत करना।
2. छात्रों में आत्म कल्याणकारी जिन-शास्त्रों को पढने की रुचि जागृत करना।
3. तत्वज्ञान और सदाचार संबंधी ज्ञान जागृत कराना।
4. चारों अनुयोगों का समंवय पूर्वक ज्ञान कराना।
5. अपने धर्म पूर्वजों के संबंध में सामान्य जानकारी देना।
6. सच्चे देव शास्त्र गुरु के प्रति भक्ति एवं बहुमान का भाव उत्पन्न कराना।
7. छात्रों का सदाचार से युक्त नैतिक जीवन बनाना।
8. छात्रों में धार्मिक क्रियाओं और धार्मिक अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण जागृत करना।
9. छात्रों को धर्म अच्छा लगे और 'मैं जैन हूं' और इसका उन्हें गर्व हो इस भावना का विकास करना।
10. छात्र कसी भी पंथवाद के पोषण और शोषण की अपेक्षा स्वाध्याय एवं धार्मिक अध्ययन की तरफ आकर्षित करना।

---

[1] यह शोध पत्र जिनस्वरा टीम और स्वरूप स्थिरता फाउंडेशन द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता का परिणाम है जिसमें लगभग 50 प्रतियोगियों ने पाठशाला के संचालन हेतु अपने विचार प्रगट किये। ततसंबंधी विशेष जानकारी हेतु एवं कुछ विशेष निबंध पढ़ने के लिए यहाँ देखें।

पाठशाला शिक्षकों के आवश्यक गुण :

पाठशाला के शिक्षकों में तीन गुण अवश्य होने चाहिये; वह **जागरूक**, **मननशील** और **मनोवैज्ञानिक** होना चाहिये।[1] कुशल अध्यापक के सर्व गुण होने चाहिये।[2]

प्रतियोगियों द्वारा सुझाव :

१. जिन धर्म का दृढ़ श्रद्धानी होना चाहिये।

२. शिक्षक स्वयं तत्व, वस्तु व्यवस्था और सदाचरण के जानकर हो।

३. शिक्षक हमेशा प्रसन्न रहना चाहिये।

४. शिक्षक अन्य की निंदा करने में मूक होना एवं अति मिष्ट और निर्दोष वचन कहने वाला होना चाहिये।

५. "माधुर्य गुण प्रीति" - मधुरता जहाँ होती है वहाँ अवश्य ही स्नेह होता है, वात्सल्य होता है। - (रयणसार जी)

६. शिक्षक में प्रसिद्धि की भावना नहीं होनी चाहिये। यह पाठशाला का उद्देश्य भुला देता है और बालकों को हाथी (जिसकी नाक लम्बी हो {मानी}) बनाने के मार्ग पर ले जाता है।

७. अगर एक से ज्यादा शिक्षक हो तो, शिक्षकों का आपस में प्रेम होना चाहिये।

८. शिक्षक का पहनावा, वाणी और मन स्वच्छ और सभ्य हो।

९. अनुभवी साधर्मी या हमारे अग्रजन, पाठशाला लेवें तो वह पाठों को पढ़ाने के साथ साथ कैसे उन पाठों के साथ जीना है वह बालकों को सीखने मिलेगा।

१०. शिक्षक की भावना सबको साथ में लेकर चलने की हो; सारे बालक, ट्रस्टी, अन्य साधर्मी, इत्यादि।

पाठशाला के संचालन के तरीके :

१. श्रावक के षट आवश्यक के पीछे का हेतु बताकर, बच्चों को व्यवहारिक जीवनशैली में उपयोगिता भासित करायें।

२. दसलक्षण, अष्टाह्निका पर्व, महावीर जयंती इत्यादि धार्मिक पर्व की सार्थकता और होली, मकर संक्रांत, इत्यादि लौकिक पर्व की निरर्थकता भासित करायें, जिससे वे सम्यक् सोच को अपनाये और मिथ्यात्व को पुष्ट करने से बचे।

३. अष्टमी, चतुर्दशी पर्व की सार्थकता सिद्ध करें।

४. पूजन, भक्ति, सामायिक का हेतु बताये और बालकों को शर्म त्यागना सिखाये। जो भी पूजन, भक्ति, स्तुति होवें उनका अर्थ उन्हें समझायें।

५. सम्पूर्ण २५ कषायों का स्वरूप और उनसे होने वाली सम्पूर्ण हानियाँ बालकों को भासित करायें।

६. चारों ही संज्ञाओं का स्वरूप समझायें; आहार, भय, मैथुन, परिग्रह।

७. पानी छान कर क्यों पीना चाहिये, रात्रि भोजन के दुष्परिणाम, इत्यादि सिर्फ कहे ही नहीं, व्यावहारिक जीवन में लागू करके बताये, जिससे बालकों को हानियाँ भासित हो।

८. समय समय पर भाषण प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, चित्रकला, भजन प्रतियोगिता, सामूहिक तत्त्वचर्चा करवायें जिससे वस्तु स्वरूप के सिद्धांत मस्तिष्क में तर्कसहित भासित हो जायें।

९. विनय, हित-मित-प्रिय वचन और संतोष गुण की उपयोगिता भासित करायें।

प्रतियोगियों द्वारा सुझाव :

१. बालकों को पास के तीर्थ क्षेत्रो एवं सुविधा अनुसार अन्य क्षेत्रों पर लेकर जाएँ, और उस जगह का बहुमान भासित करायें।

२. पंथवाद के व्यामोह से रहित दिगंबर जैन धर्म का प्रचार प्रसार होना चाहिये।

३. बालकों के बीच में प्रतियोगिता कराऐं , तो पहले सुनिश्चित करें अपने मनोवैज्ञानिक गुण से कि लौकिक में जैसे स्पर्धा की भावना बच्चों में अवसाद/ तनाव पैदा कर रहे है वो प्रतियोगिता से पुष्ट तो नहीं हो रहा है ना ?

४. टेक्नोलॉजी, मोर्डर्नाइज़ेशन, इत्यादि करते करते कहीं जिनवाणी, निर्ग्रन्थ दिगंबर गुरुओं की महिमा से दूर तो नहीं कर रहे ना ?

५. टेक्नोलॉजी केवल एक साधन है पढ़ाने का, उससे बच्चों को न बांधें, उन्हें उस विषय से बांधियें जो उन्हें तनाव/ विपरीत सोचने/ उलटे आचरण करने से बचायेगा।

६. बालकों को कुछ भी सही गलत न बतायें, उन्हें ही तर्कसंगत सोचने का मौका देवें।

७. ये त्याग करें, वो त्याग करें, इत्यादि तरह से भार ना लादें, जिन धर्म में रुचि जगाने का काम करें, उन्हें जिन धर्म की महत्ता भासित करवायें।

८. कर्तव्य परायणता से और ढीठ बनने से बच्चों को युक्ति पूर्वक, हानि भासित करवाकर बाहर निकालें।

९. पाठशाला के लिये, समाज के श्रेष्ठीगण एक कमिटी गठित करें और जहाँ भारतवर्ष और विदेश की सम्पूर्ण पाठशाला की जानकारी हो और उन्हें अगर कोई समस्या आती है तो वह कमिटी उनकी मदद करें।

---

[1] देखें प्रशिक्षण निर्देशिका

[2] . देखें मोक्ष मार्ग प्रकाशक पृष्ठ क्र. १४-१७

. देखें आत्मानुशासन जी, श्लोक क्र. ५

. देखें उपदेश सिद्धांत रत्नमाला, गाथा १८